पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

वर्ष: 2 अंक : 1 जनवरी, 2022 कुल पृष्ठ: 17 **ISSN: 2583-0511(Online)**

Visit us: www.pashupalakmitra.in

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511(Online)

वर्ष:2 अंक:1 जनवरी, 2022

संपादिकीय पैनल

प्रधान संपादक

डॉ. सतीश कुमार पाठक
अस्सिटेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संपादक

पशु प्रजनन एवं मादा रोग विशेषज्ञ

1. डॉ.आशुतोष त्रिपाठी
   अस्सिटेंट प्रोफेसर
   स.व.प. कृषि वि.वि., मेरठ
2. डॉ. विकास सचान
   अस्सिटेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

पशु पोषण विशेषज्ञ

1. डॉ. दिनेश कुमार
   अस्सिटेंट प्रोफेसर
   जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर

पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विशेषज्ञ

1. डॉ. ममता
   अस्सिटेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

क्रमांक	लेख का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	**शीत ऋतु में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल** : डॉ. विपिन मौर्य	3-5
2.	**डेरी के उत्पादन आकलन हेतु मापदंड** :डॉ.ममता, डॉ. अजय, डॉ.रजनीश सिरोही एवं डा. दीप नारायण सिंह	6-7
3.	**गाय एवं भैंसों में मद/गर्मी से सम्बंधित प्रजनन समस्या एवं निवारण** : डॉ. विकास सचान , डॉ. संजय मिश्रा एवं डॉ.अवनीश कुमार सिंह	8-9
4.	**पशुओं में बाहय परजीवी एवं रोकथाम** : रश्मि कुमारी, डॉ. अंजय एवं डॉ. दिनेश कुमार	10-12
5.	**हरे चारे के संरक्षण की विधियाँ** : रश्मि कुमारी, डॉ. अंजय एवं डॉ. दिनेश कुमार	13-16

नोट: लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा, संपादक का नही ।

संपर्क सूत्र

प्रधान संपादक
डॉ. सतीश कुमार पाठक,
अस्सिटेंट प्रोफेसर,
पशुशरीर रचना शास्त्र विभाग , पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
बरकछा, मिर्जापुर-231001, उत्तर प्रदेश

ईमेल आई डी:
pashupalakmitra1@gmail.com

Visit us: www.pashupalakmitra.in

ISSN: 2583-0511 (Online)

शीत ऋतु में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल

डॉ. विपिन मौर्य

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कुक्कुट पालन भूमिहीन, सीमान्त किसानों तथा बेरोजगार नौजवानों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने का एक प्रभावी साधन है ।मुर्गी पालन अच्छे मुनाफे वाले व्यवसायों में से एक है। कुक्कुट व्यवसाय लगातार 8-10 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की दर से बढ़ रहा है।इस व्यवसाय में कम कीमत पर अधिक खाद्य पदार्थ प्राप्त होता है । उदाहरण के रूप में ब्रायलर मुर्गे का एक किग्रा शरीर भार 2 किग्रा दाना मिश्रण खिला कर प्राप्त किया जा सकता है । इसी प्रकार मुर्गी से एक दर्जन अंडे पाने के लिये उसे सिर्फ़ 2.2 किग्रा दाना मिश्रण ही खिलाना जरूरी होता है । मुर्गी की खाद्य परिवर्तन क्षमता गाय और सूअर की तुलना में भी बहुत बेहतर होती है ।इस व्यवसाय की खासियत है कि इसे कम लागत से शुरू किया जा सकता है और इसमें कमाई जल्दी शुरू हो जाती है, क्योंकि ब्रायलर मुर्गियां 40 से 45 दिन में तैयार हो जाती हैं।

ठंड के मौसम में कुक्कुट पालक एवं किसान भाई निम्नलिखित सावधानियाँ एवं सुझाव अपनाकर इस मौसम मे उतम प्रबंधन कर ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सकते है ।शीतऋतु में कुक्कुट पालन करते समय कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखने की आवश्यकता होतीहै।

➢ शीतऋतु के आगमन से पहले मुर्गियों के बाड़े की मरम्मत करवायें; खिड़कियाँ तथा दरवाजे ठीक-ठाक हालत में होने चाहिए।पुराना बुरादा, पुराने बोरे, पुराना आहार एवं पुराने खराब पर्दे इत्यादि बदल देना चाहिए । दाना गोदाम की सफाई करनी चाहिए एवं कॉपर सल्फेट युक्त चूने के घोल से पुताई कर देनी चाहिए ऐसा करने से फंगस का प्रवेश मुर्गीदाना गोदाम में रोका जा सकता है।

➢ सर्दी के मौसम में चूजों को ठंड से बचाने के लिए गैस ब्रूडर, बांस के टोकने के ब्रूडर, चद्दर के ब्रूडर, पट्रोलियम गैस, सिगड़ी, कोयला, लकड़ी,हीटर इत्यादी की तैयारी चूजे आने के पूर्व ही कर लेना चाहिए।

➢ शीतऋतु में चूजा घर का तापमान 95oF होना चाहिए। चूजे के आते ही उसे बक्से समेत कमरे के अन्दर ले जायें, जहाँ ब्रूडर रखा हो । अब एक एक करके सारे चूजों को ओ आर एस पाउडर या ग्लूकोज मिला गुनगुना पानी पिला कर ब्रूडर के नीच छोड़ते जायें। बक्से में अगर बीमार चूजा है तो उसे हटा दें।

ISSN: 2583-0511 (Online)

➢सर्दियों में चूज़ों को सुबह के समय मंगवायें, शाम या रात को बिलकुल डिलीवरी नहीं कराएँ क्योंकि शाम के समय ठण्ड बढती चली जाती है। शेड के परदे चूजों के आने के 24 घंटे पहले से ही ढक कर रखें।चूजों के आने के कम से कम 2 से 4 घंटे पहले ब्रूडर चालू कर देना चाहिए। पानी पहले से ही ब्रूडर के नीचे रखें, इससे पानी भी थोडा गर्म हो जायेगा। शीतऋतु में चूजों को ठण्ड लगने से सर्दी-खांसी की बीमारी होने का डर रहता है इसलिए सर्दी में मुर्गियों को अधिक से अधिक ध्यान देने की जरूरत पड़ती है ।

➢चूज़ों के सही प्रकार से विकास के लिए ब्रूडिंग सबसे ज्यादा आवश्यक है। ब्रायलर फार्म का पूरा व्यापार पूरे तरीके से ब्रूडिंग के ऊपर निर्भर करता है। अगर ब्रूडिंग में गलती हुई तो आपके चूज़े 7-8 दिन में कमज़ोर हो कर मर जायेंगे या आपके सही दाना के इस्तेमाल करने पर भी उनका विकास सही तरीके से नहीं हो पायेगा। पहला तथा दूसरा सप्ताह चूजों के जीवन के लिए बहुत नाजुक होता है । इस लिए इन दिनों में अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। अच्छी देखभाल से मृत्यु दर कम की जा सकती है।पहले सप्ताह में ब्रूडर में तापमान 90oF होना चाहिए। फिर दूसरे सप्ताह से चौथे सप्ताह तक 5-5 डिग्री तापमान कम करते हुए ,ब्रूडर का तापमान उतना कर देना चाहिए की चूजें ठंढ से बचे रहें और उन्हें ठंढ ना लगे । सामान्यतः ब्रूडर का तापमान कम करते हुए 70 डिग्री फारेनहाइट तक कर देना चाहिए।

➢यदि चूजे ब्रूडर के नीचे बल्ब के नजदीक एक साथ जमा हो जायें । तो समझना चाहिए के ब्रूडर में तापमान कम हैं। तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाम करें या जो बल्ब ब्रूडर में लगा है, उसको थोडा नीचे करके देखें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिए ब्रूडर में तापमान ज्यादा हैं। ऐसी स्थिति में तापमान कम करें। उपयुक्त गरमी मिलने पर चूजे ब्रूडर के चारों तरफ फैल जायेंगे । वास्तव में चूजों के चाल चलन पर नजर रख और समझकर ही तापमान को नियंत्रित किया जा सकता है।

➢ठण्ड के मौसम में खासकर सुबह में मुर्गीघर के अन्दर कम से कम दो घंटों तक धूप का प्रवेश अतिआवश्यक है। अतः मुर्गीघर का निर्माण इस बिन्दू को ध्यान में रखते हुए उसकी लंबाई पूर्व से पश्चियम दिशा की ओर होनी चाहिए । जाड़ें में कम से कम 3 से 5 इंच की बिछाली मुर्गीघर के फर्श पर डालें जो की अच्छी गुणवत्ता की हो । शीतऋतु में मुर्गी आवास को गरम रखने के लिए ध्यान रखें की बिछावन सदा सूखी और भुरभुरी रहे । बुरादे के सीलन वाले या गीले हिस्से को तुरंत हटा दें।

ISSN: 2583-0511 (Online)

➢आवास के ऊपर प्लास्टिक, बोरे, फट्टी आदि बिछा देना चाहिए एवं साइड के पर्दे मोटे बोरे और प्लास्टिक के लगाना चाहिए, ताकि वे ठंडी हवा के प्रभाव को रोक सकें। रात्रि के समय खुली जगहों व जालियों पर्दों से ढक दें। इसमें खाली बोरी, जूट के बोरे और प्लास्टिक आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। पर्दों की निचली जगह पर बाँस बांध दें ताकि वे तेज हवाओं से ना उड़े और मुर्गियों को ठंडी हवाएं ना लगें।अंगीठी या स्टोव मुर्गीघर में जला सकते हैं, परन्तु अंगीठी अंदर रखने से पहले इसका धुआँ बाहर निकाल दें । इस से न केवल पक्षियों को आराम मिलेगा बल्कि मुर्गी आवास का वातावरण भी खुसनुमा और गर्म बना रहेगा।

➢शीतऋतु में मुर्गियों की भूख बढ़ जाती है अत: उनके दोने (फीड ट्रफ) हमेशा दाने (मॅश) से भरे होने चाहिए। उनके पोषण पर समुचित ध्यान दें। शीतऋतु में मुर्गियों को ज्यादा ठंडा जल ना पिलाये बल्कि गुनगुना पानी देना बेहतर होगा। पाँचवें या छठे दिन ब्रायलर चूजों को रानीखेत एफ का टीका आँख तथा नाक में एक –एक बूँद दें।14 वें या 15 वें दिन गम्बोरो का टीका, आई.बी.डी. आँख तथा नाक में एक –एक बूँद दें।मरे हुए चूजे को कमरे से तुरन्त बाहर निकाल दें। नजदीक के अस्पताल या पशुचिकित्सक से पोस्टमार्टम करा लें। पोस्टमार्टम कराने से यह मालूम हो जायेगा की मौत किस बीमारी या कारण से हुई है।

➢मुर्गियों का रोजाना निरीक्षण करें; सुस्त मुर्गियों की पशुचिकित्सक द्वारा जांच करवाकर दवा दें।

शीतऋतु में कुक्कुट पालन करते समय अगर उपरोक्त बातों को ध्यान में रखा जाए तो हमारे कुक्कुटपालक व किसान भाई इस विपरीत मौसम में भी कुक्कुट व्यवसाय में मुर्गीयों को ठंड से तो बचाएंगे ही और साथ ही अच्छा उत्पादन कर अधिक लाभ भी कमा सकेंगे।

पशुपालक मित्र 2(1): 6-7; जनवरी, 2022
ISSN: 2583-0511 (Online)

डेरी के उत्पादन आकलन हेतु मापदंड

डॉ.ममता, डॉ. अजय, डॉ.रजनीश सिरोही एवं डा. दीप नारायण सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय दुवासु, मथुरा

लाभ या हानि एक आधारभूत आर्थिक संकेतक है जोकि कुल व्यय एवं कुल आय के बीच का अंतर होता। पशुओं सम्बंधित अर्थव्यवस्था का सीधा सम्बन्ध पशु की जैविक क्षमता तथा प्रबंधक की प्रबंधकीय दक्षता के साथ जुड़ा हुआ है सरल शब्दों में कहा जाये तो वे मापदण्ड जिनका सीधा सम्बन्ध आय से जुड़ा हुआ है, उत्पादन मापदंड कहलाते हैं। उत्पादन मानक पशु की जैविक क्षमता के अनुश्रवण को प्रभावी बनाकर प्रबंधक की दक्षता को अधिक प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं साथ ही इन मानकों के आधार पर प्राप्त आंकड़े पशुओं के प्रजनन हेतु चयन के लिए आधार प्रदान करते हैं। आम तौर पर आर्थिक लक्षण वे होते हैं जो या तो प्राप्त आय या उत्पादन की लगत को प्रभावित करते है। प्रजनन के लिए किसी भी पशु का चयन और निर्णय किसी भी प्रजनन कार्यक्रम को शुरू करने के लिए पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है। इसके लिए बाहरी संरचना और व्यवहार सम्बन्धी लक्षणों को ध्यान में रखा जाता है। मात्रात्मक लक्षणों पर पर्यावरण का बहुत प्रभाव पड़ता है। प्रमुख मापदंड निम्न प्रकार से हैं।

भौतिक संरचना सम्बन्धी लक्षण -शरीर की दशा अयन संरचना ।
स्वास्थ्य सम्बन्धी लक्षण - रोग प्रतिरोधक क्षमता ।
प्रबंधन सम्बन्धी लक्षण- दीर्घ उत्पादक आयु दूध उतरना।
प्रजनन सम्बन्धी लक्षण -पहली बार ब्याने की उम्र ब्याने का अंतराल शुष्क अवधि।

दुग्ध उत्पादन संबंधी मापदंड –

लेक्टऐशन अवधि - यह प्रजनन के बाद तथा शुष्क काल के बीच दुग्ध उत्पादन की अवधी है। इष्टतम लेक्टऐशन अवधि 305 दिन की होनी चाहिए ।

लेक्टऐशन उत्पादन-- एक लेक्टऐशन अवधी में प्राप्त कुल दुग्ध उत्पादन को लेक्टऐशन उत्पादन कहा जाता है। स्वदेशी नस्लों में लेक्टऐशन उत्पादन विदेशी नस्लों की तुलना में बहुत कम है। यह मानक बयत की संख्या दूध दुहने की आवृति आदि कारको पर निर्भर करता है।

शिखर उत्पादन-- दुग्ध उत्पादन काल का वह बिंदु जिसपर उत्पादन अपने उच्चतम स्तर पर पहुँचता है। सामान्यतः पशु ब्याने के लगभग चार से दस सप्ताह बाद अपने शिखर उत्पादन स्तर पर पहुँचता है।

ISSN: 2583-0511 (Online)

दुग्ध उत्पादन की दृढ़ता - अधिक लेक्टशन उत्पादन प्राप्त करने के लिए शिखर उत्पादन का लंबे समय तक बने रहना आवश्यक है। शिखर उत्पादन की इस अवधी को बनाये रखना दुग्ध उत्पादन की दृढ़ता कहलाता है। शिखर उत्पादन में कमी जितनी धीमी गति से होगी उत्पादन की दृढ़ता उतनी ही सुदृढ़ होगी।
वासा तथा वसा रहित ठोस की मात्रा - साधारणतयः दूध में 85% जल होता है और शेष भाग में ठोस तत्त्व व वसा होते हैं। इस ठोस तत्त्व के मुख्य अवयव प्रोटीन तथा खनिज लवण होते हैं। इन अवयवों की मात्रा विभिन्न पशुओं में तथा एक ही पशु में विभिन्न समयों पर भिन्न भिन्न होती है।
झुण्ड औसत - जब कुल दुग्ध उत्पादन के औसत को पूरे झुण्ड के लिए गणन किया जाता है तो यह झुण्ड औसत कहलाता है गायों से जुड़े व्यवसाय के लिए 8 से 10 लीटर का झुण्ड औसत उपयुक्त मन जाता है।
वेट औसत - जब कुल दुग्ध उत्पादन के औसत का केवल दूध देने वाले पशुओं के लिए गणन किया जाता है तो यह वेट औसत कहलाता है। वेट औसत सदैव झुण्ड औसत से अधिक होता है।
उत्पादक जीवन काल - यह पशुओं के जीवनकाल में दूध देने की कुल अवधी है। यह पशुओं के विभिन्न दुग्ध उत्पादन कालो को औसत करके उसकी उत्पादक क्षमता की सही स्तिथि को दर्शाता है।

डेरी व्यवसाय में दुग्ध उत्पादन संबंधी इन मानकों के सही अनुश्रवण से आर्थिक लाभ को निसंदेह बढ़ाया जा सकता है।

गाय एवं भैंसों में मद/गर्मी से सम्बंधित प्रजनन समस्या एवं निवारण

डॉ. विकास सचान , डॉ. संजय मिश्रा एवं डॉ. अवनीश कुमार सिंह

मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, दुवासू, मथुरा

हमारे देश में किसानो की आजीविका एवं आय में कृषि तथा पशुपालन का अहम् योगदान है। हमारे देश में 20वीं पशु गणना के अनुसार वयस्क मादा भैंसों एवं गायों की संख्या 55 मिलियन एवं 81.04 मिलियन क्रमशः है। अधिकाँश गाय तथा भैसों में कुछ प्रजनन समस्याएं होती है जिसके कारण दुग्ध उत्पादन में कमी फलस्वरूप पशुपालकों को आर्थिक क्षति का सामन करना पड़ता है। मुख्य प्रजनन समस्याओं में पशु का मदकाल में ना आना और सुप्त अथवा चुप्प मद का होना एवं पशु का बार फिर जाना या गर्भित ना होना प्रमुख है। इस लेख में हम मद चक्र से सम्बंधित कुछ प्रमुख परेशानियां एवं उनके प्रबंधन के बारे में जानेगे।

➢ अधिकांशतः भारत में गाय भैंसे तीन साल की उम्र तक मद में नहीं आती है। साथ ही साथ ग्रीष्म ऋतू में भैंस एवं सर्दी ऋतू में गाय गर्मी/मद में नियमित रूप से अच्छे लक्षणों के साथ नहीं आती है।

➢असंतुलित एवं पोषक तत्वों की कमी वाला आहार, बच्चेदानी में संक्रमण, अनियमित अंडाशय की कार्यिकी एवं अत्यधिक गर्म या सर्द वातावरण इत्यादि पशु के मदकाल में ना आने के कुछ प्रमुख कारण होते है। इस समस्या से निजात पाने के लिए कुछ वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी के साथ उचित प्रबंधन करना अतिआवश्यक है।

➢नियमित मद्चक्र एवं प्रजनन के लिए उचित मात्र में दिए गए संतुलित आहार का प्रमुख योगदान है। आहार में सूखे एवं हरे चारे के साथ दाने का उचित मात्र में मिश्रण करना नितांत आवश्यक होता है। संतुलित आहार में नमक एवं खनिज लवणों का मिश्रण अतिलाभकारी होता है। इससे पशु को उचित मात्र में कार्बोहायड्रेट, प्रोटीन, वसा, मिनरल और विटामिन की पूर्ती होती है जोकि प्रजनन प्रबंधन के अतिअवाश्यक होता है।

➢पशु को प्रतिदिन 50 ग्राम की दर से खनिज लवणों का मिश्रण देना चाहिए। साफ़ एवं भरपूर मात्र में पीने के पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए. पशुचिकित्सक की सलाह से हर तीन से चार महीने में कृमिनाशक दवाओं का उपयोग करना चाहिए।

➢ग्रीष्म ऋतू में भैंसों का रख रखाव कम गर्म अथवा छायादार स्थानों में करना तथा पशु को दिन में कम से कम एक बार अथवा दो बार नहलाना उचित होता है। वह्यपरिजीवियों से निजात पाने के लिए पशु के रहने के स्थानों में नियमित रूप से परिजीविनाशक दवाओं का छिडकाव करते रहना चाहिए।

➢अंडाशय के ऊपर पीतपिण्ड का स्थायी रूप से बने रहना तथा गर्भाशय के संक्रमण की अवस्था में भी पशु नियमित रूप से गर्मी में नहीं आता है। इस अवस्था में पंजीकृत पशुचिकित्सक से संपर्क करके उचित सलाह एवं इलाज़ करवाना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online)

➢कुछ पशु अनुवांशिक कमियों के कारण भी मदचाक्र में नहीं आते। ऐसे पशुओं की, जो तीन या चार साल के बाद भी मद/गर्मी नहीं दिखाते, पशुचिकित्सक से जांच कवानी चाहिए।

➢कई बार यह भी देखा गया है कि मद के सही लक्षणों (योनी द्वार से साफ़ स्राव का आना, पशु का दुसरे पशुओं को अपने ऊपर चढ़ने देना, बार रम्भाना, बार पेशाब करना, थानों में बार बार दूध का उतरना, अत्यधिक चहलकदमी करना इत्यादि) की जानकारी ना होने के कारण भी पशुपालक मद/गर्मी को नहीं पहचान पता है और पशु के मद में होने पर भी गर्भाधान नहीं हो पाता।

➢कुछ भैसे मद में होते हुए भी स्पस्ट रूप से लक्षणों को प्रदर्शित नहीं करती है। इस अवस्था सुप्त मद/गर्मी कहा जाता है. इस दशा में अंडाशय की कार्यिकी एवं अंडक्षरण (अंडे का निकलना) बिलकुल सामान्य तरीके से होता है परन्तु मद के लक्षण ना या बहुत कम दिखने के कारण पशु को गर्भित नहीं करवाया जा सकता है। ऐसे पशुओं में मद के लक्षणों की पर्याप्त अभिव्यक्ति के लिए संतुलित आहार जो कि खनिज लवणों से भरपूर हो का अहम् योगदान होता है।

➢पशुपालक को मद के लक्षणों की पहचान होना बहुत ही आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतू में नहलाने या पानी के छिडकाव से भी काफी मदद मिलती है। ऐसे पशुओं के पास नर पशु रखने से मद काल की अभिव्यक्ति में संतोषजनक सुधार लाया जा सकता है एवं साथ ही साथ यह नर पशु मादा के मद/गर्मी में आने पर उसे आसानी से पहचान सकता है।

➢उचित प्रबंधन के बाद भी यदि मद के लक्षण उभर कर नहीं आते तो पशुचिकित्सक से संपर्क करके एवं कुछ हार्मोन्स के उपयोग से भी मद/गर्मी को नियंत्रित एवं तथानुसार गर्भाधान कराया जा सकता है।

उपर्युक्त सुझाये गए वैज्ञानिक प्रबंधन एवं पशुचिकित्सकीय सलाह की मदद से पशुओं में मद/गर्मी से सम्बंधित होने वाली प्रजनन समस्यायों का सफल प्रबंधन एवं निराकरण किया जा सकता है जिससे पशुपालको को उनकी आय एवं जीविका को उन्नत करने में निश्चित ही मदद मिलेगी।

ISSN: 2583-0511 (Online)

पशुओं में बाहय परजीवी एवं रोकथाम

रश्मि कुमारी[1], डॉ.अंजय[2] एवं डॉ.दिनेश कुमार[3]

[1]कृषि विभाग, बिहार सरकार, सुपौल, बिहार-852131
[2]सहायक प्रोफेसर, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बसु, पटना, बिहार
[3]सहायक प्रोफेसर, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, जेएनकेवीवी, जबलपुर, एमपी-472001

पशुओं में मक्खी, किलनियाँ, तथा मच्छर जोकि बाहय परजीवी हैं अनेक प्रकार के रक्त परजीवियों को शरीर के अंदर खून चूसने के द्वारा फैला देते हैं । कोई भी घरेलू पशु इस समस्या से बचा नहीं है। भारत में किलनी एवं किलनी द्वारा फैलने वाले रोगों से एक अनुमान के अनुसार लगभग दो हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष को नुकसान होता है। ये बाहय परजीवि खुजली करने के साथ-साथ त्वचा को खराब कर देते हैं तथा वहां पर घाव बन जाते हैं। पशुओं के बाल गिर जाते हैं, खाल फटने लगती है तथा अंत में त्वचा से खून बहने लगता है। बाहय परजीवी अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न प्रकार के परजीवी ¼बेबेसिया, थेलेरिया, ट्रिपैनोसोमा, मलेरिया½ तथा कृमि रोग, बीमार पशुओं से स्वस्थ पशुओं में फैलाते हैं। अतः इन कीटों के बारे में पशुपालकों को जानकारी होनी चाहिए ताकि बाहय परजीवियों से पशुओं को बचाकर बीमारियों के प्रकोप से बचाया जा सके।

1. किलनियाँ (Tick)

किलनी सभी प्रकार के पालतू पशुओं में पायी जाती हैं। परंतु इनकी संख्या मार्च अप्रैल से लेकर अक्टूबर माह तक ज्यादा रहती है तथा खतरनाक बीमारियों को फैलाने में सहायक होती है। हमारे देश में पशुधन से संबंधित किलनियाँ जो की महत्वपूर्ण किसमें पाई जाती हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं बुफिलस, हायलोमा एनाटोलिकम, रिफिसिफिलस सिनगुइनस तथा हीमोफिलस है। पालतू व दुधारू पशुओं में बुफिलस किलनि द्वारा बेबेसिया रोग फैलता है। इस रोग का परजीवी बेबेसिया गाय, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ता तथा घोड़ा में किलनि द्वारा रक्त चूसने से होता है। इस बीमारी को पेशाब का बुखार या रेड वाटर बुखार कहते हैं क्योंकि बीमार पशुओं का पेशाब का रंग लाल हो जाता है तथा जानवरों को तेज बुखार आता है।

ISSN: 2583-0511 (Online)

हायलोमा प्रजाति की किलनी द्वारा थेलेरिया नामक बीमारी दुधारू पशुओं में फैलती है। संक्रमित पशुओं में बुखार, आंख और नाक से पानी गिरना, निकटतम ग्रंथि में सूजन और दूध लेने की क्षमता कम हो जाती है। नवजात पशुओं की इस भयानक बीमारी की वजह से मृत्यु भी हो जाती है।

2. मक्खियाँ (House Fly)

वयस्क मक्खियाँ रात और सुबह के समय पूर्ति में रहती है तथा सालभर पाई जाती हैं। यह बीमार पशुओं से जीवाणु लेकर दूसरे स्वस्थ पशुओं को काटने के दौरान छोड़ देती हैं। जिन स्थानों पर वर्षा और बाढ़ अधिक होती है या फिर जलवायु मक्खियों के प्रजनन के लिए उपयुक्त होता है, अधिक मात्रा में पाई जाती है। मक्खियाँ पालतू पशुओं में सर्रा नामक बीमारी फैलाती है। इसमे पशु धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है तथा दूध देने की क्षमता कम हो जाती है।

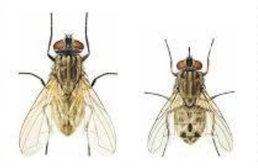

3. मायसिस (Myasis)

जानवरों की त्वचा के अंदर लार्वा विकसित होने से मायसिस बीमारी हो जाती है। यह मुख्यतः भेड़ों में होता है। इन मखियों का रंग पीला, हरा, नीला, व काला होता है। मादा मखियां सरते हुए मांस व मल की बदबू या भेड़ों के शरीर के पिछले भाग व जांध की उन पर चिपक जाती है। वहा पर व अंडा देने लगती है तथा इन अंडाओं से लार्वा निकलते हैं, जो मैगट बन जाते हैं, इस कारण इस में से बदबू आती है तथा उस हिस्से की ऊन या बाल गिर जाते हैं।

4. खुजली या खाज (Scabies)

खाज या खुजली एक चर्म रोग है, जो पशुओं में मायटस (कुटकी) की विभिन्न जातियों द्वारा होता है। ये मुख्यतः सारकॉप्टिक, सोरोप्टिक, कोरियोप्टिक, व डेमोकॉप्टिक प्रकार की होती है। यह बीमारी ज्यादातर गोवांशी, भेड़, बकरी, सूअर, कुत्ता, ऊंट आदि में होती है। त्वचा के ऊपर अंडे देने से वहां पर लारवा बनते हैं जो वहां पर गांव बनाने लग जाती हैं तथा खुजली होती है इस्केसाथ बाल झड़ने लगते हैं रोगी कुत्तों की त्वचा का रंग लाल हो जाता है तथा सूजन व खुजली होती है इसे लाल खास भी कहते हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online)

रोकथाम

1. पशुग्रह में साइपरमेथ्रिन का घोल बनाकर (20ml/L) पानी में मिक्स करके छिड़काव करें।
2. गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि जानवरों पर इसका एक ml प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रेपंप द्वारा छिड़काव करें।
3. मेलाथियान 0.25 प्रतिशत पानी में मिलाकर पशु ग्रह व पशुओं पर छिड़काव करें।
4. पशुओं के आसपास धुआ करने से कीटों को भगाएं।
5. रोगग्रस्त भेड़ में घाव के आसपास की ऊन पूर्ण काट कर घाव को 0.05 प्रतिशत साइपरमेथ्रिन के घोल से साफ करके कीटनाशक क्रीम का प्रयोग करें।
6. मृत पशु के शव को तुरंत गड्ढा करके दफना दे।
7. कुत्तों को साबुन से नहा लाकर 0.05 प्रतिशत बीएचसी घोल बनाकर लगाएं।
8. बुझे चूने का पानी व गंधक मिलाकर 10 दिन तक प्रयोग करें।
9. आइवरमेक्टिन 1 ml प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार इंजेक्शन लगाने पर भी लाभ मिलता है।

10. अच्छी प्रकार के कीटनाशक बाजार से भली-भांति पता कर खरीदे तथा उनकी उचित मात्रा में प्रयोग करें।
11. कीटनाशकों को पशु पर प्रयोग करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखा जाए कि पशु की आंखों व मुंह को नुकसान ना पहुंचाएं।
12. बाह्य परजीवीयो के निवारण के लिए समुदायकी योजना बनाएं या फिर निकटतम पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

ISSN: 2583-0511 (Online)

हरे चारे के संरक्षण की विधियाँ

रश्मि कुमारी[1], डॉ.अंजय[2] एवं डॉ.दिनेश कुमार[3]

[1]कृषि विभाग, बिहार सरकार, सुपौल, बिहार-852131
[2]सहायक प्रोफेसर, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बसु, पटना, बिहार
[3]सहायक प्रोफेसर, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, जेएनकेवीवी, जबलपुर, एमपी-472001

कभी-कभी किसान के पास हरे चारे तथा घास इत्यादि की उपलब्धता पशुओं की आवश्यकता से अधिक होती है। ऐसी स्थिति में इस अतिरिक्त हरे चारे व घास को खराब किए बिना उन दिनों के लिए संरक्षित कर सकते हैं जब इनके पैदावार व उपलब्धता कम होती है। चारों का संरक्षण मुख्यतः दो प्रकार से किया जा सकता है

1. साइलेज बनाकर तथा
2. 'हे' बनाकर।

इन विधियों द्वारा हरे चारे की गुणवत्ता को बनाए रखा जा सकता है। संरक्षित चारों को खिलाकर हम पशुओं से उस समय भी अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जब हरे चारे की अत्यधिक कमी रहती है।

साइलेज बनाना

साइलेज उस पदार्थ को कहते हैं जो कि अधिक नमी वाले चारे को हवा रहित नियंत्रण किण्वन विधि द्वारा बनाया जाता है। साइलेज बनाने के लिए विशेष प्रकार के गड्ढे अथवा खातों की आवश्यकता होती है जिसे लोग साइलो कहते हैं। जब हरे चारे को हवा की अनुपस्थिति में किण्वित्त किया जाता है तो लैक्टिक अम्ल पैदा होता है। यह अमल हरे चारे को अधिक समय तक सुरक्षित रखने में सहायक होता है।

साइलेज बनाने के लिए उत्तम फसलें

अच्छा साइलेज बनाने के लिए यह आवश्यक है कि फसल का चुनाव अच्छी प्रकार से किया जाए तथा उसे ठीक अवस्था में काटकर कुट्टी की जाए। जिस चारे की फसल में किण्वन के लिए घुलनशील सकरा की समुचित मात्रा नहीं होगी उससे अच्छा साइलेज नहीं बनता है। अच्छा साइलेज बनाने के लिए चाड़ा फसलों की कटाई प्रायः फुल आने की अवस्था या फिर दोनों के दुग्ध अवस्था में करनी चाहिए। अनाज वाली हरी फसलें जैसे मक्का, बाजरा, ज्वार, इत्यादि साइलेज बनाने के लिए अधिक उपयुक्त होती है। इन फसलों में सकड़ा की अधिक मात्रा होने के कारण प्राकृतिक किण्वन अच्छा होता है। दलहनी फसलें साइलेज के लिए इतनी उपयुक्त नहीं होती है क्योंकि इसमें शकरा की मात्रा कम तथा प्रोटीन अधिक होती है। परंतु दलहनी फसलों के साथ अगोला तथा धान का हरा पौधा मिलाकर (4:1) उसके ऊपर लगभग 3 से 5% सिरा मिलाकर उत्तम किस्म का साइलेज तैयार कर सकते हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online)

घुलनशील शकरा के टूटने के कारण पीएच घटकर 3.8 -4.2 तक आ जाता है। इस पीएच पर साइलेज में शुष्क पदार्थ के आधार पर लैक्टिक अम्ल की मात्रा 8-12% होती है। इस प्रकार के साइलेज को एक अच्छे साइलेज की संज्ञा दी जाती है।

साइलेज बनाने की विधि

साइलेज बनाने के लिए ऐसे हरे चारे जिसमें शुष्क पदार्थ की मात्रा 25 से 30% हो, कुट्टी बनाकर साइलेज बनाने वाले गड्ढों में दबा- दबा कर इस प्रकार भरा जाना चाहिए कि कटे हुए चारे के बीच में कम से कम हवा रहे। हवा बाहर निकलने से किण्वन शीघ्र प्रारंभ हो जाता है। कुट्टी बनाने के से कम जगह में अधिक चरा भरा जा सकता है तथा लैक्टिक अम्ल बनने वाले जीवाणुओं के लिए अधिक रस मिलता है। चारे को साइलो की दीवारों से 2 से 3 फुट ऊंचाई तक भरे जिससे कि दबने पर भी बना हुआ साइलेज जमीन के स्तर से ऊपर रहें तथा बरसात का पानी गड्ढों में ना जाए। गड्ढों को भरने के बाद पॉलिथीन की चादर से ढक कर हवा रहित करना चाहिए। गड्ढे के ऊपर गीली मिट्टी या गोबर का लेप करके भी हवा रहित किया जा सकता है।

खिलाने की विधि

अच्छी प्रकार से बनाया हुआ शैलेश 30 से 35 दिन में पशुओं को खिलाने योग्य हो जाता है। सबसे पहले मिट्टी को सावधानीपूर्वक हटा लेना चाहिए तथा इसके बाद पॉलिथीन की चादर को एक किनारे से हटाना चाहिए। साइलेज को आवश्यकतानुसार सावधानी से निकालकर पशु को खिलाना चाहिए जिससे कि साइलेज का कम से कम मात्रा हवा के संपर्क में आये। अन्यथा साइलेज के खराब होने की संभावना रहती है।

अच्छा साइलेज बनाने हेतु आवश्यक बातें

1. साइलेज बनाने वाला गड्ढा उस स्थान पर होना चाहिए जहां बरसात का पानी ना जा सके।
2. हरे चारे में नमी का प्रतिशत 65 से 75% के बीच में होना चाहिए।
3. हरे चारे को कुट्टी बनाकर ही गड्ढों में भरना चाहिए।
4. साइलो अथवा गड्ढों से अधिकतम वायु को निष्कासित कर देना चाहिए।

'हे' बनाना

सुखाये हुए हरे चारे को 'हे' कहते हैं। हे इस प्रकार बनाना चाहिए कि चारे का हरापन बना रहे तथा इसके पोषणमान में हानि ना हो। उत्तर भारत में 'हे' तैयार करने का सबसे उपयुक्त समय मार्च-अप्रैल है। उस समय आसमान में धूप अच्छी तथा आद्रता कम होती है जिससे चारा जल्दी से सूख कर अच्छा 'है' तैयार हो जाता है।

ISSN: 2583-0511 (Online)

'हे' बनाने की विधि

हे बनाने में हरे चारे को अच्छी प्रकार और समान रूप से धूप एवं हवा में सुखाना चाहिए। जमीन पर फैलाकर सुखाने से भी है तैयार किया जा सकता है। इसके लिए चारे को काटने के बाद जमीन पर 25 से 30 सेंटीमीटर मोटी परतों में फैला कर धूप में सुखाया जाता है। यदि धूप अधिक तेज ना हो तो हरे चारे को अधिक पतली शतकों में फैलाया जाता है। जब चारे कि अधिकांश ऊपरी पत्तियां सूख जाती है एवं इन में थोड़ा कुरकुराप न आ जाता है तो चारे को छोटे-छोटे ढेरों में इकट्ठा कर लिया जाता है। मार्च अप्रैल के महीने में चारे को इतना सूखने में 3 से 4 घंटे लगते हैं। बनाए गए ढेरों की पत्तियां जब सूख जाए परंतु मुरने पर एकदम न टूटने लगे इससे पहले ही चारे को पलट लेना चाहिए। चारे के ढेरों को ढीला रखा जाता है जिससे उसमें हवा आती जाती रहे। उलट-पुलट का यह कार्य दूसरे दिन प्रातः काल में ही कर लेना चाहिए क्योंकि उस समय पत्तियों में कुरकुरापन कम होता है। दूसरे दिन शाम को इन छोटी-छोटी ढेरियों को इकट्ठा कर लेना चाहिए। पुन: इन सूखे ढेरों को अगले दिन तक पड़े रहने देना चाहिए जिससे कि भंडारण से पूर्व चाड़ा पूरी तरह सूख जाए। तैयार की हुई हे को छप्पर या अन्य किसी सुरक्षित स्थान में भंडारित कर लेना चाहिए।

Maize Fodder (मक्का चारा)

Silage (साइलेज)

Lucerne (लुसर्न)

Lucerne hay (हे)

'हे' बनाने के लिए उपयुक्त फसलें

बरसीम, रिजका, लोबिया, सोयाबीन, जइ, सूडान घास, आदि से हे बनाने के लिए उत्तम फसलें हैं। इसके अतिरिक्त अक्टूबर में मक्का और ज्वार से भी हे तैयार किया जा सकता है।

'हे' बनाने में सावधानियां

अच्छी गुणवत्ता वाला हे तैयार करने में निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए:

1. हे बनाने के लिए फसल की कटाई प्रातः काल की ओस समाप्त होने के बाद ही करनी चाहिए।
2. हे के गुणों पर फसल की अवस्था का काफी प्रभाव पड़ता है। इसलिए फसल की कटाई उस अवस्था में करना अच्छा होता है क्योंकि अधिक पकी हुई फसल के हे की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती।
3. फसल को ठीक से सुखाना चाहिए अन्यथा भंडारण के दौरान उसमें गर्मी पैदा होती है जिससे उसका पोषण मान कम होता है तथा उसके क्षय की भी संभावना रहती है।

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511 (Online)

लेख भेजने के लिए निर्देश :

1. लेख हिन्दी में मंगल फॉन्ट एवं microsoft word में होने चाहिये ।
2. लेख पशुपालन से संबन्धित होना चाहिये।
3. लेख के प्रकाशन का निर्णय संपादक का होगा।
4. लेख का प्रकाशन निः शुल्क होगा ।
5. लेख को प्रकाशन के लिए ईमेल आई डी pashupalakmitra1@gmail.com पर भेजना होगा ।
6. लेखक को निम्न प्रारूप में एक स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लेख के साथ सलग्न करना होगा **प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न लेख...शीर्षक................ लेखक ...लेखक का नाम .... द्वारा लिखित एक मौलिक, अप्रकाशित रचना है, तथा इसे प्रकाशन के लिए किसी अन्य पत्रिका में नही भेजा गया है।**
7. लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा , संपादक का नही